वेद का इस्लाम पर प्रभाव

पण्डित रामचन्द्र देहलवी का भाषण

प्रकाशक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान

नई दिल्ली-110002

॥ ओ३म् ॥

वेद का इस्लाम पर प्रभाव

पं० रामचन्द्र देहलवी

का भाषण

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान
नई दिल्ली-110002

॥ ओ३म् ॥

प्रकाशकीय निवेदन

पूज्यपाद प्रातः स्मरणीय पं० रामचन्द्र जी देहलवी आर्य जगत् के महान् दार्शनिक एवं आर्य सिद्धान्तों के मर्मज्ञ विद्वान् थे। पं० जी की जिह्वा पर सरस्वती का साक्षात् निवास था। महर्षि दयानन्द द्वारा रचित सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका संस्कारविधि, वेदभाष्य आदि ग्रन्थों को पं० रामचन्द्र देहलवी जी ने जिस मनोयोग से पढ़ा और उन पर विचार किया ऐसी मिसाल आर्य जगत् में दूसरी नहीं मिलती। बड़ी गहराई से वैदिक सिद्धान्तों का अनुमोदन व मंडन करते हुए बिरोधियों के बड़े से बड़े आरोपों का वे बड़ी सरल भाषा में उत्तर देते थे। पं० जी नें अपनें जीवन में हजारों शास्त्रार्थ किये, हजारों व्याख्यान दिये और देश के एक कोने से दूसरे कोने तक घूम-घूम कर वैदिक धर्म का प्रचार किया। उनके भाषणों में एक जादू की झलक दिखाई देती थी जो सुनने वालों पर तुरन्त प्रभाव डालती थी।

पंडित जी वेद, कुरआन, बाइबिल तथा अन्य ग्रन्थों के प्रमाण एवं अकाट्य तर्क से वैदिक धर्म के शाश्वत सिद्धान्तों का प्रतिपादन करते थे। उनका एक भाषण 'वेद का इस्लाम पर प्रभाव' प्रकाशित किया जा रहा है।

हमें विश्वास है कि आर्य जन इसे अधिक से अधिक प्रचारित कर अपने कर्त्तव्य का पालन करेंगे।

—स्वामी आनन्द बोध सरस्वती
प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
नई दिल्ली-110002

दिनांक
16-11-87

यह पुस्तक श्री मूलचन्द बजरंगलाल आर्य साहित्य प्रकाशन स्थिर निधि
के सहयोग से प्रकाशित की गई ।

ओ३म्

वेद का इस्लाम पर प्रभाव

व्याख्याता—श्री पं० रामचन्द्र देहलवी
शास्त्रार्थ-महारथी

ओ३म् ! द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया
समानं वृक्षं परिषस्वजाते ।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्य-
नश्नन्नन्यो अभिचाकशीति ॥

विषय तो आपने विज्ञापन में देख ही लिया होगा कि वेद का कुर्आन पर या मुसलमानों पर या इस्लाम पर क्या प्रभाव पड़ा है ? हम ईश्वर, जीव और प्रकृति तीनों को अनादि मानते हैं । यह हमारा मौलिक सिद्धान्त है । और इन्हीं तीनों से सृष्टि का बनना सम्भव है ।

यदि किसी धर्म या सम्प्रदाय वाला इन तीन से कम मानता है तो न तो दुनिया बन सकती है और न उसका सिलसिला आगे चल सकता है । इसलिए उन लोगों ने (मुसलमानों ने) यह सोचकर कि धर्म के मैदान में, जबकि बुद्धि इतनी उन्नति कर रही ह और ये मसले, जिन

की तरफ लोगों की तबीयत रुजू नहीं होती थी, अब वह सामने आ रहे हैं और उनके सम्बन्ध में लोग विचार करने लगे हैं कि जब परमात्मा की दुनिया में ही ऐसा नियम चल रहा है कि कोई चीज मूल के वगैर पैदा नहीं होती है तो यह मसला फरामोशी की हालत में छोड़ा नहीं जा सकता। कल्पना कर लीजिए किसी चीज की भी। क्या वह अपने-आप पैदा होती है ? क्या उसके लिए किसी प्राकृतिक पदार्थ की आवश्यकता नहीं होती है ? होती है। तो यह देख कर ही जनाब मौलवी शिबली नोमानी ने अपनी किताब 'अल्कलाम' में लिखा हुआ है कि 'माद्दा कदीम है' अर्थात् प्रकृति अनादि है। इसके वगैर जगत् नहीं बन सकता। प्रकृति के मायने भी यही हैं कि 'प्रकृयते अनया' जिससे सबसे पहले कोई चीज बनाई जाए, उसे प्रकृति कहते हैं। उसी को माद्दा कहते हैं। हमारी सदाकत ने इतना जोर मारा कि उन्होंने यह मन्जूर किया कि 'हयूला' (उपादान कारण) अर्थात् माद्दा, वह हमेशा से होना चाहिए और उसके अन्दर उसकी सिफात और हरकात भी जाती होनी चाहिए। यानी उस में हमेशा से होनी चाहिए। मैंने तो उन्हें कुर्आन में भी दिखा दिया कि आपने बिना देखे अपना यह अकीदा बना लिया कि नेस्ती से हस्ती हो सकती है।

इम्मिन् शैइन इल्ला इन्दना खजाइनुहू व 'मानुनज्जिलुहू इल्ला बिकदरिम्मालूम् ॥

सूरत १५। रु० कू० २। आयत २१।

अर्थ—जितनी चीजें हैं हमारे यहां सब के खजाने हैं, मगर हम एक निश्चित परिणाम और ज्ञान के साथ उनको भेजते रहते हैं।

कहते हैं कि जो चीज भी है वह सब हमारे खजाने में मौजूद हैं। क़ौन कह रहा है यह ? कुर्आन का अल्लाह कह रहा है कि 'हमारे

खजाने में तमाम चीजें मौजूद हैं और जिस कदर हम जानते हैं कि उन में से लेनी चाहिए उतनी हम अपनी प्रजा के लिए ले लेते हैं। तो बताइए यह कहना है कि कोई चीज नहीं थी, दुनिया बन गई, गलत बात है। हम तो इसे ऐसे मानते कि जैसे बाजीगर जामामस्जिद के पास खड़ा होकर जब टिकरी के रुपये बनाता है तो हम समझ लेते हैं कि वैसे ही उसने भी (खुदा ने भी बिना माद्दा के दुनिया) बनाई होगी। अगर सचमुच रुपये बन जाते तो पीछे पैसे क्यों मांगता ? जब पीछे हरेक से पैसा-पैसा मांगता है तो मालूम हुआ कि यह सिर्फ हाथ की चालाकी है। तो इस तरीके पर उन लोगों ने मान लिया कि खुदा कहता है 'हो जा' और हो जाता है—कुर्आन में एक आयत आई हुई है "इजा अरादा शैइन् इन्नमायकूलुहू कुन्, फयकून्" जब अल्लाह किसी काम के करने का इरादा करता है तो कह देता है कि 'हो जा' और हो जाता है तो भला ऐसा कहीं होता है ? बहुत पुरानी बात है। सब से पहले मैंने इसे स्वर्गीय श्री लेखराम जी की किताब में पढ़ा था कि उन्होंने यह ऐतराज किया था।' बहुत ठीक ऐतराज है अगर कोई चीज नहीं थी तो कहा किस से कि हो जा ? और यदि कोई चीज थी तो यह कहता कि सिवाय खुदा के कुछ नहीं था, गलत बात है। दोनों बातों में से कोई एक बात सही और एक बात गलत है। पण्डित गुरुदत्त जी विद्यार्थी ने बड़ा अच्छा लिखा है। कहते हैं कि—

"अगर आप मानते हैं कि एक कोई ऐसी नफी है, (नेस्ती है) जिससे कोई चीज पैदा हो जाती है और दूसरी कोई ऐसी है जिससे पैदा नहीं होती तो कहते हैं कि There must be two kinds of nothing, one ordinary nothing and the other peculiar nothing. (दो प्रकार की नेस्ती होनी चाहिए—एक साधारण नेस्ती और दूसरी

खास-नेस्ती) ? होगी जो कई किस्म की होगी जो कोई चीज होनी चाहिए, नाचीज नहीं होनी चाहिए । कितनी अच्छी बात उन्होंने कही ।

तो यही बात मैंने एक बार फतहपुर हसुवा में जो कानपुर से आगे है एक मौलवी साहब से पूछी थी । वे वहाँ इलाहाबाद से तशरीफ लाए थे । मैंने उनसे पूछा था—जरा लफ्ज सख्त हैं, मैं उन्हें बाद में हिन्दी में आपको समझा दूंगा—"पैदाइशे दुनियां से पहले मुम्किनात का भी अदम था और मुम्तनियात का भी । क्या वजह है कि मुम्किनात का अदम तो दुनिया की पैदाइश होने पर खत्म हो गया लेकिन मुम्तनेआत का अदम बाकी रहा", आप नहीं समझे होंगे । इसलिए मैं आप को जरा समझा दूं । मुम्किन शब्द के अर्थ हैं सम्भव, कि जो चीज पैदा हो सकती है । दुनिया पैदा हुई है, सम्भव है और असम्भव, जो न पैदा हो सके वह असम्भव है, जैसे गधे के सिर पर सींग, गधे के सींग पैदा नहीं हुए । न पहले थे और न अब हैं । जब गधा पैदा नहीं हुआ था तब भी गधे के सींग नहीं थे और उसके पैदा हो जाने के बाद भी नहीं हैं । तो गधे के सींग न होना असम्भव चीज है, जो कभी नहीं हो सकती Impracticable. तो दुनिया से पहले गधा नहीं था और गधे के सींग भी नहीं थे अर्थात् मुम्किनात व मुम्तनियात दोनों का अदम था । दुनिया को पैदाइश से पहले न गधा था और न गधे के सींग । लेकिन जब दुनिया पैदा हुई तो गधे का 'न होना' होने में बदल गया अर्थात् जो गधे का न होना था खत्म हो गया । लेकिन सींग वैसे के वैसे ही रहे । न तो सींग गधे के न होने से पहले थे और न गधे के होने के बाद हैं । इस प्रकार जो मैंने प्रश्न किया कि—

"दुनिया की पैदाइश से पहले मुम्किनात का भी अदम था और मुम्तनिआत का भी । क्या वजह है कि दुनिया की पैदाइश के बाद

मुम्किनात का अदम तो खत्म हो गया और मुम्तनेआत का बाकी रहा ?"

मौलाना क्या जवाब देते हैं कि, "पण्डित जी, एक में सलाहियत थी और दूसरे में नहीं थी ।"

मैंने कहा, "बस जहां सलाहियत होगी वह शय होगी, लाशय नहीं रहेगी, वह कोई चीज हो जाएगी, वह Something होगी Nothing नहीं हो सकती ।" खैर, यह एक लतीफ चीज थी जो मैंने आप को सुना दी । यह चीज देखकर उन्होंने मान लिया कि हां हकीकत में माद्दा था, प्रकृति थी और खुदा ने माद्दे से दुनिया बनाई ।

अब दूसरा प्रश्न यह उठता है कि दुनिया किस के लिए बनाई ? यदि वह न हो तो दुनिया का बनाना बेकार ? इसलिए उसका (जीवात्मा का) मानना भी अनिवार्य है, जरूरी है । दुनियां में हम देखते ही हैं कि तीन से कम के अन्दर कोई काम पूर्ण नहीं होता है । पूर्ण हो नहीं सकता है । 'तीन' पूर्णता का द्योतक है । यहां भी, इस समय, मैं (व्याख्यान देने वाला), आप (श्रोता, सुनने वाले) और मेरा व्याख्यान (जो मैं बोल रहा हूं) तीन हैं । इन तीनों में से किसी एक को निकाल दीजिए तो यहां का जलसा खत्म । बाजार में भी तीन चीज हैं (दुकानदार, खरीदार और चीज) इन तीनों में से एक जगह निकाल दीजिए, फिर बाजार चलता है क्या ? एक जगह दुकानदार नहीं है, दूसरी जगह खरीदार नहीं है । अब चलाइए बाजार ? बाजार कभी नहीं चलेगा । वह खुला हुआ भी बन्द होगा । बस इस सदाकत को देखकर मौलाना शिबली नोमानी ने यह बयान किया था कि माद्दा कदीम है और उस से दुनिया बनती है ।

एक बार मिर्जा हैरत साहब देहलवी जो बड़े दरीबे में रहते थे उन से एक दिन मेरी बात हुई। उनसे पूछा कि कहिए जनाब, अगर आप यह मानते हैं कि रूह पैदा हुई तो जरा फरमाइए कि इसके (आत्मा) अजजा क्या हैं कि जिनसे यह बनी है ? कहने लगे, "पण्डित जी, यह बात नहीं है—कुर्आन में आया हुआ है "फइजा सव्वैतूहूवनफखतु-फीहिमिरूँही", अल्लाह कहता है जब हम ने तैयार कर लिया, किस को ? आदम के पुतले को, (न फक्तु) तो उसमें अपनी रूह फूंक दी (मिरूँही) अपनी रूह में से। तो क्या खुदा की रूह पैदा हुई थी ? मुझ से उलाहना देते हुए कहने लगे, "नहीं, इसलिए रूह पैदा नहीं होती, वह हमेशा से है।" इस प्रकार उन्होंने रूह और माद्दे का होना हमेशा से मान लिया। खुदा को वे मानते ही थे।

क्यों हुआ यह परिवर्तन ? क्या वजह है; यह तबदीली वाके हुई ? कोई तो कारण होना चाहिए ? मैं कहता हूं कि यह सृष्टि इतनी जोर-दार है, इतनी Predominent (प्रीडामीनैण्ट) है, इतनी शक्तिशाली है कि जो चीजें गलत हैं उन्हें भुलवा देती है और जो सही हैं उन्हें मनवा देती है। लेकिन जरा गौर करने वाला होना चाहिए। जिन लोगों ने गौर किया उन लोगों ने हकीकत का बयान कर दिया।

अब इससे आगे बयान करता हूं मिर्जा साहब, मिर्जा गुलाम, अहमद कादियानी. अहमदी जमात उन्होंने क्या लिखा है ? कुदरती बात है, जब तीनों चीजें हैं तो खाली नहीं रह सकता (खुदा)। यह ख्याल कि बेकार रहता है भला कैसे हो सकता है ? अकेला रहे तो जरूर बेकार रहेगा। इन तीनों चीजों में से (ईश्वर, जीवात्मा और प्रकृति) कोई चीज अकेली मान लीजिए बाकी चीजें बेकार रह जायेंगी। मोटे तौर पर उपदेशक बेकार यदि सुनने वाले न हों, राजा

बेकार यदि प्रजा न हो, डाक्टर बेकार यदि मरीज न हों, मास्टर बेकार यदि पढ़ने वाले न हों। इसलिए खुदा भी बेकार है (जीवात्मा और प्रकृति के अभाव में)। यह सोचकर उन्होंने क्या किया ? उन्होंने सिलसिला बयान किया, जो हम ने अपनी उम्र में जब से न जाने कितने मुबाहसे किए हैं उन में बीसियों मौलानाओं से बातचीत करने का मौका हुआ। वे इस दुनिया या सृष्टि को सब से पहली सृष्टि मानते हैं। कहते हैं, "यह सबसे पहली दुनिया है। इस से पहले कोई दुनिया नहीं थी।" लेकिन जब उन्होंने यह देखा कि उस से पहले इतना बड़ा जमाना, जिस का न कोई शुरू है और न कोई खातिमा, Interminable Period, और इतने वक्त तक परमात्मा बैठा रहा खाली। अच्छा नहीं मालूम होता। आजकल Unemployment है। क्या हालत हो रही है ? क्या खुदा भी इतने लम्बे समय तक Unemployed रहा ? यह खयाल करके उन्होंने यह परिवर्तन किया कि जब से खुदा है तब से दुनिया का सिलसिला चला आ रहा है और यह चलना भी तभी से चाहिए। तो मिर्जा साहब ने खुदा के अन्दर दो ताकतें मानी हैं। एक दुनिया के पैदा करने की और दूसरी नाश करने की, जिसको उन्होंने इफ्ना (नाश) और ईजाद (उत्पन्न) नाम दिया है। उत्पन्न करने की व नाश करने की शक्ति। यह दोनों शक्तियां भगवान् में हमेशा से हैं। वह ऐसा मानते हैं। जब एक दौर समाप्त हो जाता है तो दूसरी का दौर शुरू हो जाता है। यह बराबर चलता रहता है और हम नहीं कह सकते हैं कि इसका कोई शुरू है कि नहीं और इसी सम्बन्ध में उन्होंने कुर्आन की एक आयत पेश कर दी 'कुल्ला यौमिन् हुव फीशान्।"

खुदा हर एक दिन किसी न किसी शान में रहता है। यह एक कुर्आन की आयत लेकर इसी के आधार पर उन्होंने यह माना। उन्होंने

कहा कि यह हमारी तराश या इख़्तरा नहीं है, कुर्आन के आधार पर ही यह हमारा अकीदा है। हम ने कोई नई चीज नहीं निकाली है यह कुर्आन में मौजूद है। अब इससे आप क्या अन्दाजा लगाते हैं ? वेद के कितने नजदीक आ गए हैं ? वेद में लिखा है "पादोऽस्येहाभवत् पुनः।"

वेद में आया हुआ है कि यह क्रम हमेशा से है। दुनिया के बाद सृष्टि और सृष्टि के बाद प्रलय, प्रलय के बाद सृष्टि। रात के बाद दिन और दिन के बाद रात होते चले आ रहे हैं।

स्वामी ब्रह्ममुनि जी महाराज के आग्रह पर मैं एक बार उन के गांव में गया। वह गांव मुसलमानों के आधिक्य वाला है। स्वामी जी ने कहा था कि वहां के निवासी क्योंकि मुसलमान हैं इसलिए आपका व्याख्यान सुनने वे जरूर आयेंगे। तो वहां मेरा व्याख्यान तनासुख़ पर हो रहा था। मैंने कुर्आन की आयतों से यह बताया कि उसमें तनासुख मौजूद है। चाहे आप न माने यह और बात है। वैसे आप के यहां मुतनाकिया नामक एक बहुत बड़ा सम्प्रदाय भी था जो आवागमन अर्थात् तनासुख को मानता था। यहां दिल्ली सदर में दारुल्फला नाम की एक जगह है। उसके एक बड़े बुजुर्ग व अन्य बहुत से उनके साथी यहां एक कांफ्रेंस में आये थे। मैं उसमें प्रधान था (एक सम्मेलन का) वहां उन्होंने तनासुख अर्थात आवागमन को स्वीकार किया था। वह कहते थे कि कुर्आन में आवागमन है और वे आयत वही पेश करते थे जो मैं किया करता हूं और कहते थे कि इस बिना पर तनासुख जरूर होता है और होना चाहिए। एक जोरदार बात उन्होंने और कही जो हम भी कहा करते हैं क्योंकि सीधी सी बात है, "सौ सयाने एक मत।"

उन्होंने यह कहा कि, "दुनिया में आप देखिए कि बहुत-से आदमी पागल रहते हैं, वे सारी उम्र पागल ही रहते हैं, और बड़ी भारी संख्या ऐसे लोगों की है जो मूर्ख हैं, समझते कुछ नहीं; अपनी रोजी कमाते हैं और सारा दिन गुजार देते हैं, रात को सो जाते हैं। बहुत से ऐसे बच्चे हैं जो थोड़ी उम्र में मर जाते हैं, बहुत से ऐसे हैं जो माता के गर्भ में ही समाप्त हो जाते हैं, बहुत-से ऐसे हैं जो नास्तिक हैं परमात्मा को मानते ही नहीं हैं।" तो कहते हैं कि जब दुनिया में ऐसे आदमी भी हैं और खुदा ने दुनिया क्यों बनाई है ? ताकि लोग इबादत करें, "माखलक्तुल्जिन्न वल्लिसा इल्लालियाबुदून्" हमने जिन और इन्सान इबादत के लिए पैदा किए हैं। दुनिया में लोगों के पैदा करने की खुदा की गरज है कि लोग उसकी इबादत करें। कैसे पूरी होगी ? पागल, मूर्ख व नास्तिक हैं ये सब कैसे इबादत करेंगे ? जो बच्चे थोड़ी अवस्था में, या माता के गर्भ में ही मर गए हैं, वे खुदा की इबादत कैसे करेंगे ? तो इन सभी लोगों का दुनिया में फिर आना जरूरी है। वगैर दुबारा आए वे दुनिया में आने का मक्सद अर्थात् खुदा को इबादत कैसे कर सकेंगे ? इसलिए अहमदी लोगों ने दुनिया के सिलसिले को माना है और अब दूसरी जमात वाले भी मानने लगे हैं और अब कहने लगे हैं कि हम नहीं कह सकते हैं कि खुदा ने आज तक कितनी बार दुनिया पैदा की है क्योंकि पैदाइश के बाद फना और फना के बाद पैदाइश यह सिलसिला चला आ रहा है। यह परिवर्तन हो गया है।

तो वहां लखनौती में, स्वामी ब्रह्ममुनि जी के गांव में जो व्याख्यान हो रहा था, उसे सुनने बड़ी तादाद में मुसलमान लोग आए थे। वहां मैंने कुर्आन की आयात पढ़ी, 'तूलिजुल्लैल फिन्नहारि व तूलि जुन्नहारा फिल्लैल व तुरिव्रजुल्हैयामिनल्मैयता व तुरिव्रजुल्लमैथतामिनल्है', इसका

अर्थ यह है कि अल्लाह रात को दिन में दाखिल करता है और दिन को रात में दाखिल करता है और मुर्दा से जिन्दा को और जिन्दा से मुर्दा को निकालता है। मैंने यह कहा कि, "यह स्पष्ट है और रात के बाद दिन ही होता है। इस में कोई शंका की बात नहीं है तो इसी सच्चाई की बिना पर उन्होंने नीचे लिखा है कि जैसे दिन के बाद रात और रात के बाद दिन होता है और यह सिलसिला बराबर जारी है"—एक बार मुबाहसे के बीच एक खास मजेदार बात आई थी। मैंने अपने मद्दे मुकाबिल मौलाना से पूछा था, "बताइए यहां जो बयान है यह महज एक दिन और एक रात का है या ज्यादा का ?" तो कहने लगे कि "आप भोले बनते हैं—नहीं! यह सिलसिले को बयान किया है, अल्लाह शानऊ ने, परमात्मा ने, खुदा ने इस सिलसिले को बयान किया है कि रात के बाद दिन और दिन के बाद रात बराबर होता चला आ रहा है।" "सिलसिला है ?" "कि जी हां', तो इससे आगे वाली आयत के बारे में क्या कहेंगे आप कि व तुरव्रजुल्है यामिनल्मैता व तुरिव्रजुल्ल-मैयतामिनल्है मुर्दा से जिन्दा को निकालता है और जिन्दा को मुर्दा से ?" तो मौलवी साहब बोले कि "इस से आप तनासुख साबित कर रहे हैं।" मैंने कहा कि, "मैं साबित नहीं कर रहा हूं जो साबित है उसे दिखा रहा हूं। अब कहिए आप क्या मानते हैं ?"

इस बयान को सुनकर एक मुसलमान साहब बड़े प्रभावित हुए। तो उन्होंने कहा कि आप हमारी दावत कबूल करें कल सुबह आठ बजे। मैंने कहा "बहुत अच्छा।" मैं, स्वामी जी व श्री जगदीश भूषण भजनीक, हम तीनों अगले दिन प्रातः ८ बजे उन साहब के घर पहुंच गए। उन्होंने वहां बड़े साफ बर्तन में अपनी भैंस का दूध निकाला, हमारे सामने गर्म किया और निहायत साफ गिलासों में हमें वह पीने के

लिए दिया। जब हम दूध पी चुके तो वह मुझे एक अलग कमरे में ले गए और कहा, 'पण्डित जी, रात के व्याख्यान से मुझपर बड़ा प्रभाव पड़ा है।" मैंने कहा "क्या ?" तो बोले कि "मैं बेवकूफ नहीं हूं," मैं अरबी जानता हूं कुर्आन पढता हूं, आपने जो हवाला दिया है, उस हवाले से मुझपर असर पड़ा है। मैं आज से तनासुख का मानने वाला बन गया हूं, कुर्आन में यह चीज मौजूद है।" इस से आप अन्दाजा लगाइए कि वैदिक सच्चाई कितनी जोरदार रही है कि वह मसले जो पहले नहीं माने जाते थे अब माने जाने लगे हैं। कहते हैं हकीकत में यह बात ठीक है कि खुदा दुनिया पैदा करता है और फना करता है और यह सिलसिला बराबर जारी रहता है और अगर वह ऐसा न करे तो उसका खाली बैठना साबित होता है। रूह भी मौजूद है। प्रकृति भी मौजूद है। तीनों मौजूद हैं। ऐसी अवस्था में वह खाली नहीं बैठ सकता।

अगर कोई यह मान ले कि खुदा सारी दुनिया को बिल्कुल फनाकर देता है, फिर नए सिरे से बनाता है तो यह चीज लाजिम आयेगी कि जो जीवात्मा दोजख और बहिश्त में जाने चाहिए वे भी खत्म हो जायेंगे। कैसे वे दोजख व बहिश्त में जा सकेंगे। तो वे मानते हैं, 'नहीं आत्माएं रहती हैं।' वे कहते हैं कि यह दोजख और बहिश्त में रहेंगे। Eternal Condemination and Eternal Reward ऐसा इनाम जो हमेशा रहेगा, ऐसा Condemination जो हमेशा रहेगा। ये दोनों बातें वहां उन्होंने बयान कीं। अब इस में भी कुछ परिवर्तन हो गया है।

यहीं परेड के मैदान में शास्त्रार्थ तो नहीं हो रहा था, ख्वाजा कमालुद्दीन साहब व्याख्यान दे रहे थे। वह अहमदी जमात के एक बहुत बड़े वकील थे और वे व्याख्यान दे रहे थे। उस व्याख्यान में उन्होंने कहा

था कि 'हमारे यहां दोजख हमेशा का नहीं है, क्या कभी जेलखाना हमेशा के लिए हुआ करता है ? जितनी सजा है उससे ज्यादा नहीं हो सकती। इस लिए दोजख हमेशा के लिए नहीं हो सकता कुर्आन में यह चीज'मौजूद है। जब लोग अपने आप पाप को भोग लेंगे तो खुदा उन्हें वहां (दोजख से) निकाल देगा। कुर्आन में साफ लिखा है कालन्नारुमस्वाकुम् खालिदीने फीहा इल्लामाशा अल्लाह—कहा कि आग तुम्हारा ठिकाना होगा, जिस में हमेशा-हमेशा रहोगे जो अल्लाह चाहे।

आग तुम्हारा घर होगा, आग तुम्हारा ठिकाना होगा जिस में हमेशा-हमेशा रहेंगे। मगर जो अल्लाह चाहे। अगर अल्लाह चाहे तो उन्हें निकाल सकता है। इसीलिए दोजख से निकाल लिए जायेंगे। यह सब अस्पताल की कोठरियां हैं इनमें से निकल आयेंगे और इन को निकालकर जन्नत में भेज देगा। वहां वे अपने अच्छे कर्मों का फल भोगेंगे।" जब वह यह व्याख्यान दे रहे थे तो मैंने कहा कि "मौलाना मैं आप से एक बात पूछना चाहता हूं ?" उन्होंने कहा, "क्या ?" मैंने कहा, 'वे लोग बहिश्त में हमेशा कैसे रहेंगे ? अभी आप ने दलील यह दी है कि कर्म (पाप) खत्म होने पर (भोगने से) खुदा उन्हें दोजख से निकालकर जन्नत में भेज देता है। तो जन्नत भी तो शुभ कर्मों का फ़ल है, वे कर्म भी तो भोगने से खत्म हो जायेंगे तो जन्नत या बहिश्त हमेशा के लिए कैसे हो सकती हैं ? मैं आप से यह पूछता हूं कि दुनिया में लोग ज्यादा बुरे काम करते हैं कि ज्यादा अच्छे ?" उन्हें बोलना पड़ा क्योंकि कुर्आन के बखिलाफ तो बोल नहीं सकते थे। अगर बोलते कि, 'लोग अच्छे काम करते हैं', तो वहां मैं पढ़ देता 'कलीलुम्मिनू इबादियश्शकूर।'

हमारे बन्दों में शुक्र करने वाले बन्दे बहुत कम हैं—"कि हां पाप तो लोग ज्यादा करते हैं और पुण्य कम।" तो मैंने कहा कि पाप ज्यादा

होते हुए भोगने से समाप्त हो जाते हैं और उसके परिणामस्वरूप उन्हें मिली दोजख से निकालकर ईश्वर उन्हें जन्नत में डाल देगा तो जो पुण्य-कर्म हैं वे समाप्त होंगे क्या ? और उनके परिणामस्वरूप मिली जन्नत में से क्या निकालना नहीं होगा ? याद रखिए यदि आप वहां से न निकलेंगे तो मैं आपको वहां से निकाल लाऊंगा क्यों कि पुण्य समाप्त होने पर बहिश्त में कोई नहीं रह सकता।" तो इस पर मौलाना बोले कि जन्नत या बहिश्त तो खुदा की रहमत से मिलती है, तो मैंने कहा कि दोजख खुदा के गजब से नहीं मिलती है क्या ? खुदा में गजब भी हैं और रहमत भी है। तो कहने लगे, "गजब पर रहमत गालिब रहती है", तो मैंने कहा, "खुदा सिफत में अपने ऊपर गालिब और मगलूब भी रहता है। उसकी सिफ़त एक-दूसरे के ऊपर गालिब है क्या कह रहे हैं आप ? बड़ी मुश्किल में रहता होगा ? ऐसा नहीं हो सकता। मैं आप को वहां रहने न दूंगा।" वहां कुर्आन में ऐसा लिखा हुआ है 'अत्वा अन् गैरामज जुज' यह देन है जो गंडेदार नहीं है, एकरस होती है यानी उसमें जुज नहीं है।

अभी इतना और अभी इतना ऐसा नहीं है, गंडेदार नहीं है। एक मियादे मुअय्यना तक, एक नियत समय तक जन्नत या बहिश्त या स्वर्ग का आनन्द लगातार भोगता है। यों कहिए कि वह सुख गंडेदार नहीं है बल्कि लगातार एक निश्चित समय तक मिलता रहता है। आगे लिखा है कि जब तक आसमान और जमीन कायम रहेंगे, तो मैंने कहा कि "क्या आसमान और जमीन हमेशा कायम रहेंगे ?" "नहीं ! हमेशा तो नहीं रहेंगे", मौलाना बोले। तो मैंने कहा कि बस साफ़ बता दिया कि जब तक आसमान और जमीन रहेंगे तभी तक वह सुख प्राप्त होगा। साफ हो गया कि न जन्नत हमेशा की है और न दोजख हमेशा

की है। यह साफ बात है कि लोग आराम की जगह से नहीं निकलते। इस प्रकार आज वेद का यह असर उन पर पड़ा कि वह अपने पुराने और गलत विश्वासों को छोड़ने के लिए विवश हुए।

आगे जो अन्य विवादास्पद बात है वह यह है कि हम वेद का इल्हाम सब से पहला मानते हैं कि सृष्टि की आदि में वेद आया। जब इन्होंने (मुसलमानों ने) यह देखा कि कुर्आन से पहले और भी किताबें थीं (तौरात, जबूर और इंजील) तो पहले और भी कोई जमाना रहा होगा या होना चाहिए। तो क्या कहते हैं, 'हां, इब्तदा में वेद आया है। यह पहली जमात का है जैसे Primary जमात होती है और उसकी किताबें होती हैं इस तरह पर वेद आया है हमारा M. A. का Course है। कुर्आन मजीद M. A. का Course और वेद, वह Primary Class की किताब है।" मैंने कहा, 'खैर आप ने कहा (वेद को) किसी क्लास की किताब तो माना। लेकिन हम आप से पूछ लेते हैं, जरा यह तो बताइए कि ऐसा कौन-मसला है कि जो जरूरी है इन्सान को इन्सान बनाने के लिए, मुक्ति प्राप्त कराने के लिए, महान् से महान-तम उन्नति के लिए आवश्यक है और वह वेद में नहीं हैं और कुर्आन में है ? क्या चीज कुर्आन में हो और वेद में नहीं हो। वह आप बता सकते हैं कि जिस से ऊंची से ऊंची तरक्की इंसान कर सके वह आप जरा फरमा दीजिए ?'' इस पर वह कुछ न बोले। उस मजमे में एक पागल से साहब बैठे थे, बोले कि जनाब एक चीज नहीं है। मांस खाना यह कुर्आन में है और वेद में नहीं है। मैंने कहा कि "बहुत बड़ी चीज के लिए कुर्आन आया है। इन को तो हम भेडियों से, कुत्तों से, गीदड़ों से सीख सकते थे। इस काम के लिए कुर्आन के आने की क्या जरूरत थी ? उसने ऐसे जानवर पैदा कर दिए थे जो हमें यह बात सिखा सकते थे।"

एक समझदार शख्स वहां बैठे थे कहने लगे, "पण्डित जी साहब, आप किसकी तरफ़ लग रहे हैं। ये तो बेसमझ आदमी हैं, इसका दिमाग फ़िरा हुआ है (उनके कहने पर मुझे ज्ञात हुआ कि वे पागल हैं) आप सोचें मेरा कहने का मतलब यह है कि वेद के सिद्धान्त जाकर इतना जोर पकड़ गए हैं कि उनका कोई जवाब नहीं बन पाया। मैं कुर्आन की बिना पर ही हमेशा उन का जवाब दिया करता हूं वह कहते हैं पहले कमइल्म लोग थे। धीरे धीरे, धीरे-धीरे इल्म बढ़ता हुआ चला गया है और इसलिए खुदा ने कुर्आन को पीछे भेजा। बरेली की बात है। वहां शास्त्रार्थ था। बरेली के शास्त्रार्थ में मुसलमानों ने दावत दी थी। गुफ्तगू का समय दिया था इसलिए हमें पहुंचना ही था। मैं यहां दिल्ली से बरेली पहुंचा। स्टेशन पर एक आर्य भाई आए हुए थे आर्य समाज से। वह कहने लगे, "कहां चलेंगे पण्डित जी ?" मैंने कहा कि सीधे वहीं मस्जिद में जहां जल्सा हो रहा है, तो हम वहीं चले गए। जब हम वहां पहुंच गए तो हमने उनसे कहा कि आपका जल्सा शुरू होने वाला है आप ने दावत दी है, हम हाजिर हो गए हैं, कृपया हम को मौका दिया जाए। मन्त्री जी—आप जानते हैं—उन का कहना मानना ही पड़ता है। वह कहने लगे, "पण्डित जी साहब, आप देखिए जरा, रात का वक्त है, देर हो गई है।" मैंने कहा, "देर क्या है ? जल्सा तो आप का शुरू नहीं हुआ है अभी, इसलिए मौका दीजिए।" एक मौलाना जो पटना से आए हुए थे खड़े हो गए और कहने लगे, "क्यों नहीं वक्त देते हैं नाजिम साहब इन्हें, यह मांग रहे हैं।" तो नाजिम जरा नाराज हो गए कि "इन्तजाम के बीच दखल दे रहे हैं आप।" तो उन्होंने कहा कि आप खड़े हो जाइए, पण्डित जी सवाल करेंगे और आप जवाब दीजिये। विचारों को खड़ा होना पड़ा।

मैंने उनसे पूछा कि, "देखिए आप के यहाँ तौरात, जबूर और इंजील ये किताबें आईं। अल्लाह की तरफ से आईं। खुदा कादिर मुतलक है, सर्वज्ञ भी है और शक्तिमान भी है। मानते हैं आप ?" "हाँ जरूर", "तो बताइए जो उसने अपना इल्म जाहिर किया था तौरात में, जबूर में उस इल्म को तबदील करने की क्या जरूरत पड़ी ? क्या उसने अपने अनुभव Experience के साथ तब्दीली की है ? कौन-सी बात भूल गया था ? स्वामी दर्शनानन्द जी ने अपनी किताब में यही लिखा है—कौन-सी बात भूल गया था तौरात में जो जबूर में ठीक कर दी ? और फिर जबूर के बाद इंजील आई। तो कौन-सी गलती रह गई थी जबूर में जो इंजील में ठीक की गई ? और इंजील में कौन-सी रह गई जो कुर्आन में ठीक की है ? और यह सिलसिला कहां तक चलेगा ? आगे अब और कौन-सी चीज आएगी अगर कुर्आन में भी कोई कमी रह गई हो ?"

तो मौलाना खड़े हुए मुस्कराते हुए और क्या कहते हैं ? 'पण्डित जी साहब, आप का किसी हकीम से वास्ता नहीं पड़ा?" मैंने कहा, "किसी बीमार को पड़ा करता है, तन्दुरुस्त को क्या मतलब पड़ा है ?" मैंने कहा, "फरमाइये, क्या कहते हैं आप ?" कहने लगे, "हकीम का यह तरीका होता है कि अगर किसी को कोई तकलीफ होती है और पेट की खराबी हो तो पहले वह दवाई देता है जिस से मेदा नर्म हो जाये और जब मेदा नर्म हो जाता है तब ऐसी दवा देता है कि जिस से जुल्लाब होकर पाखाना हो जाये और मेदा साफ हो जाये। तो यह जितनी किताबें हैं (तौरात, जबूर व इंजील) ये वे थीं कि जिससे खुदा ने उन लोगों के अन्दर जो माद्दा था सच्चाई के बखिलाफ, वहदानियत के बखिलाफ उस तमाम को नर्म कर दिया और जब कुर्आन मजीद आया तो जुल्लाब से

कतई सव को निकालकर बाहर फेंक दिया।" मैंने कहा, "बहुत ठीक", अव मैं आपसे पूछता हूं, "वह लोग जो पहले चले गए (तौरात, जबूर व इंजील के वक्त के) उनका मेदा नर्म हो गया लेकिन जुल्लाब नहीं हुआ वह चिल्ला रहे हैं कि अल्लाह मियां ये दुनियां के जो हकीम है उनके तरीके भी बखिलाफ हैं वह जिसका मेदा नर्म करते हैं उसी को जुल्लाब भी देते हैं। आपने हमारा मेदा नर्म नर्म करके हमें जुल्लाब नहीं दिया, हम यों गुल मचा रहे हैं और इनको बिना मेदा नर्म किए जुल्लाब दे रहे हैं। जो कुर्आन वाले हैं यह इधर गुल मचा रहे हैं यह क्या किया? सोचना चाहिए क्या होगा?" जब नाजिम ने देखा कि गड़बड़ हो रही है तब वह मेरे पास आये और बोले, "पण्डित जी साहब, अब कल।" मैंने कहा, "हां कल के लिए मैं बेकल नहीं हूं। अब कल के लिए कह दीजिए लेकिन सोच-विचारकर रखिए। कौन आदमी रखना चाहिए ?" तब उन्होंने दूसरे दिन एक और मौलाना को रखा। उन्हें कह दिया कि आप रहने दीजिए।

अगले दिन वहां मुबाहसे में जीवात्मा के मुताल्लिक बात आई। मैं आप को यह बताना चाहता हूं कि यह लोग (मुसलमान) क्या मानते हैं। वह मानते हैं इन्सान की रूह अलग होती है और जानवरों की रूह अलग होती है, इन सबकी रूहें अलग-अलग होती हैं। ऐसा ये मानते हैं।

तो कहने लगे, 'पण्डित जी, तनासुख मानने से इबलाते नौईयत लाजिम आती है यानी जाति की विशेषता भंग हो जाएगी जो जिस योनि की है उसी योनि में दाखिल हो सकती है—अन्य योनि में दाखिल नहीं हो सकती। जरा लफ्ज सख्त हैं, लेकिन मैं हिन्दी में कर दूंगा—क्योंकि नौ यह हैं कि तमाम जितनी रूहें हैं, इन्सानों (की) के शरीर में

वह सब एक प्रकार की हैं 'समानप्रसवात्मिका जातिः।' यह जाति का लक्षण किया है। यानी जितने भी Individuals किसी भी जाति के हैं वे सब एकता होने चाहिए। अगर आदमी गधा बन जाये तो यह समझिए कि उसकी रूह की असलियत बदल गई (नौईयत तब्दील हो गई) उसकी (आत्मा की) असलियत जो है वह परिवर्तित हो गई इसलिए इब्ताले नौईयत लाजिम आता है। "कैसे मानते हैं आप इस चीज को ?" मैंने कहा कि इब्ताले नौईयत का उसूल अगर सही है तो मैं आप से पूछता हूं कि खुदा ने बहुत-सों को बन्दर और सूअर बना दिया था कि नहीं ? जब उन्होंने खुदा का हुक्म नहीं माना था कि 'हफ्ते के दिन मछली का शिकार न करना।' तो बन्दर और सूअर बना दिया कि नहीं बना दिया था ? 'अब गौर करना चाहिए कि यह कैसे हो गया ? कुर्आन फरमाता है मल्लानहुल्लाहु व गजिबा अलैहि व जिअला मिन्हुमुल्किरदता वल्खना जीर। साफ है कि नहीं लिखा हुआ ?" कि, "हां, यह तो है।" तो बताइए आपके फरमाने के मुताबिक इब्ताले नौईयत लाजिम आ गई क्या ? जो इन्सान थे उन्हें बन्दर और सुअर बना दिया। अहमदी लोग कुछ और मानते हैं लेकिन उनकी वह बात चलती नहीं है। मौलाना ने यह मान है लिया कि हकीकत में इन्सान नीची योनियों में जा सकता है। इस को तनासुख माना है, मस्ख हो गये हैं। यानी उनकी शक्ल-सूरत तब्दील हो गई इस तरह पर कि कुछ आदमियों को बन्दर बना दिया है और कुछ आदमियों को सुअर बना दिया। यह तनासुख क्या है ? जो नस्ख करके शरीर को बर्बाद करके, जलाकर, फूंककर, कुछ करके दूसरा नया बनाया जाय यह तनासुख है। तो कहने लगे कि नहीं उन इन्सानों की शक्लो-सूरत नहीं बदली बल्कि उन इन्सानों की हालत ही ऐसी हो गई। यह बात अहमदी लोगों ने कही है। वैसी बन गई ? कि वे सूअर और

बन्दर मिजाज के हो गए। लेकिन शक्लें नहीं बदलीं, वे वैसी की वैसी रहीं। मैंने कहा जरा गौर करें यह उस अकीदे से बेहतर नहीं है बल्कि बदतर है। अगर यह मान लें कि एक आदमी हकीकत में सूअर की शक्ल अख्तियार करके भाग जाता है पाखाने की तरफ तो बुरा नहीं लगेगा। लेकिन, अगर वह आदमी की तो शक्ल का हो और आदत यह पड़ गई हो कि बजाय सीधा मेरे पास आने के वह उधर पाखाने की तरफ चला जाय तो आप गौर कीजिए कि क्या अच्छा लगेगा ? इसलिए अपनी इस तावील को इस Interpretation को जो आप कर रहे हैं इस को जरा हटा दीजिए और सीधी हमारी बात मानिये। क्या मानिये ? कि जब हकीकत में इन्सान अपने को मनुष्य योनि में ही ऐसा बना लेता है तो भगवान कहता है That is not a fit place for you go there. तुम्हारे लिए यह वाजिब जगह नहीं है तुम वहां चले जाओ। इसलिए फिर वह वहां चला जाता है और उसको वहां भेज दिया जाता है ! वहां बुरा नहीं लगता। इसलिए परम्परा का तरीका बड़ा साफ है और उसकी मिसाल तो आप के पास भी मौजूद है। इस तरह उन लोगों को खुदा ने बना दिया और आदमी थे वह बन्दर और सूअर बन गये। जब इतना स्पष्ट है तो हमारा अकीदा इतना जबरदस्त है कि खुदा को भी मंजूर करना पड़ा। आप चाहे न मानें यह और बात है लेकिन खुशी है कि आप इस चीज को मान गए हैं।

अब आगे रहा थोड़ा-सा यह कि गुनाहों की माफी होती है या नहीं। हम मानते हैं कि गुनाहों की माफी नहीं होती। "अवश्यमेव भोक्तव्य कृत्तं कर्म शुभाशुभम्।" कुर्आन में लिखी है यह बात 'मन्अमिला स्वालिहन् मिन्जकरिन् औउन्साफउलाइका यद्खुलुनल्ज-न्नता व युर्जकूना फीहा बिगैरि हिसाब' की जो मर्द हो या औरत कोई

हो, अगर शुभ कर्म करें तो जन्नत में भेजे जायेंगे और उनको वहां रोजी वेहिसाव दी जायेगी । यह ठीक है । जव यह चीज है तो मैं मालूम करना चाहता हूं कि जव उनको वेहिसाव दी जायेगी तो क्या बात वाकी रह गई ? क्या खुदा उनके कर्म का फल देता है ? तो एक नौजवान मौलवी शौकतअली सब्जबारी मेरठ में वहस कर रहे थे । वहां मेरठ में टाउन हाल के सामने जल्सा हो रहा था, उन्होंने वड़ी अच्छी तरह मुझ से फरमाया, "पण्डित जी, सजा का मंशा क्या है ?"—(वड़ी अच्छी गुफ्तगू करने वाले थे) मैंने कहा—सजा का मंशा यह है कि जो काम हमने गलत किया है फिर न करें, दुवारा मौका दिया जाये हमें करने का । यह नहीं कि दुवारा मौका न दिया जाये तो वह सजा नहीं । हैं वह तो वदला है । ऐसा न होना चाहिए । लेकिन कुर्आन में तो ऐसी चीज मौजूद है । वोले—"वह क्या है ? ' मैंने कहा—"देखिए साफ लिखा हुआ है "कालू रव्वना गलवत् अलैना शिकवतुनाव कुन्ना कौमज्ज्वाल्लीन् रव्वना अखिज्न/मिनहा फइन्उदना फइन्ना ज्त्रालिमून्' लोग पूछते हैं खुदा से कि ये रव हमारी वदवख्ती ने गल्वा किया... और हमारे रव हमें दोजख से निकाल ले अगर हम दुबारा करें तो हमारा कुसूर । कितनी सीधी वात है कि ऐ रव हमारी वदवख्ती ने हम पर गलवा किया है कि इस वजह से हमने पाप कर्मकर लिया । अब तू मेहरबानी करके हमें इसमें से (दोजख से) निकाल दे । अगर हम हुक्मउदूली करें दुवरा करें तो हमारा कुसूर । तो अल्लाह क्या कहता है 'कालख्सऊ फीहावलातुकल्लिमून्', इसमें फिटकारे पड़े रहो और हम से बात मत करो । मैंने कहा—"यह तो आप के यहां है और मेरे यहां यह चीज नहीं है । मेरे यहां तो खुदा आदमी को फल देता है और फल देकर यह कहता है कि जो तू पवित्र हो गया है अब फिर शुभ कर्म कर ।" तो फिर अब मुझ से पूछने लगे कि 'पण्डित जी, सजा की गरज

तो यही है कि हम गुनाह दुबारा न करें।" मैंने कहा कि, "जी हां।" तो मौलाना बोले कि "खुदा कादिर मुतलक होनें से, ज्ञानी होने से दिल के हाल को जानता है कि यह शख्स दुबारा पाप नहीं करेगा। तो मानो ऐसा शख्स है जिस ने सच्ची तौबा की है और दुबारा नहीं करेगा।" मुझसे उन्होंने कहा कि "खुदा सर्वज्ञ है, सब-कुछ जानता है, कि अमुक आदमी ने सच्ची तौबा की है वह नहीं करेगा क्योंकि वह दिल के हाल से वाकिफ है तो सजा का मन्शा पूरा हो गया—आगे पाप न करे जिसे पहले कर चुका है—तो यह चीज खुदा जानता है फिर तो सजा न होनी चाहिए और तौबा कुबूल हो जानी चाहिए। फिर क्यों कहते हैं कि कर्मों को भोगना पड़ेगा?"

मैंने कहा—"आपने उसका सिर्फ एक जुज लिया है। दूसरे जुज की तरफ खयाल नहीं किया।" "क्या दूसरा भी है?" फर्ज कीजिए किसी शख्स ने किसी जगह आग लगा दी कि जिससे बहुत-से छोटे-छोटे बच्चे वगैरह, गाय, भैंस, भेड़, बकरी आदि जल गए। अब फिर उसके दिल में खयाल पैदा हुआ कि हां हकीकत में मैंने अच्छा काम नहीं किया। मैंने किसी दुश्मनी की वजह से यह काम किया था लेकिन इसके परिणाम को देखकर मुझे भी बुरा लगा है। इस वास्ते वह खुदा से दुआ कर रहा है कि ऐ खुदा! तू मुझे मुआफ कर, मेरे से गलती हो गई है, मैं दुबारा ऐसा नहीं करूंगा। तो खुदा क्या कहता है, ठीक है तू आगे नहीं करेगा तो मैं आगे तुझे सजा नहीं दूंगा। लेकिन अब क्या हो रहा है? अब यह जरूर हो रहा है कि जिनका तूने नुकसान किया है तुझको दुनिया में आना होगा और दुनियां में आकर उस नुकसान को Make good (मेक गुड) करना होगा। पूरा करना होगा। तू ने जो दुनिया का नुकसान किया है उसें पूरा करना पड़ेगा, जरूर भोगना

पड़ेगा। यह जो मैंने शौकतअली साहब से कहा तो जरा उनकी गर्दन नीची हो गई। मैंने कहा, "बताइये, यह नुकसान हुआ है कि नहीं ?" एक आदमी होली के दिन अपने हाथों में कालौस लगाकर किसी के पीछे भागता है और उसका मुंह काला करना चाहता है, वह उसके पीछे भागा लेकिन वह हाथ न आ सका तो उसका हाथ तो काला हो हो गया लेकिन अगर वहां लगा पाता तो उसका मुंह भी काला हो जाता। तो दो जगह असर हुआ कि नहीं ? इसी तरह दो जगह हैं इस चीज को याद रखिये कि जिस आदमी ने पाप कर्म किया है, पाप करने से आन्तरिक तौर से उसका हृदय जो काला हुआ है और दूसरों के लिए उसने जो उल्टा सोचा है या नुकसान किया है उस नुकसान का फल भी उसको भोगना पड़ेगा। इसीलिए कहा जाता है 'असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्माऽमृतंगमय'। यह परमात्मा से इसीलिए प्रार्थना की गई है कि आदमी कभी गलत रास्ते की तरफ न चला जाये। इसलिए यह जितने भी गलत अकीदे हैं जब हमारे साथ मिलाये गये तो लोगों ने उनमें तब्दीली पैदा कर ली।

मैं जरा-सा हाल आपको हैदराबाद का सुना दूं कि वहां क्या हुआ था। जिस वक्त मैं वहां गया तो मेरा व्याख्यान तनासुख पर हो रहा था—एक चीज बाकी रह गई। वह बताकर फिर हैदराबाद का हाल सुनाऊंगा और फिर अपने वक्तमुअय्यन में समाप्त कर दूंगा।

पिलखुवे में शास्त्रार्थ हो रहा था। यहीं के (दिल्ली के) एक मौलवी थे ! वहां शास्त्रार्थ के लिए गए थे। नौजवान ही थे, मेरे सामने लड़के ही थे। वहां शास्त्रार्थ के लिए गए हुए थे। मजमा तैयार था। दावत दी गई थी। ऐसी सूरत थी जैसी यहां हो रही है। मैं जब

वहां पहुंचा तो उन्होंने कहा—"पण्डित जी, वक्त हो गया है आप शुरू कीजिए।" मैंने कहा—"बहुत अच्छा।"

मैंने इस तरह कहना शुरू किया कि, "इतने बड़े मजमे में क्या कोई शख्स ऐसा बहादुर है जो अपनी जबान से यह कह दे कि मेरी बीवी मुझसे पैदा हुई है ?" किसी ने जबाव नहीं दिया तो मैंने कहा कि, "मैं आदम-अलै-सलाम की तारीफ किए बगैर नहीं रहता हूं कि वह यह कहते हैं कि मेरी बीवी मुझसे पैदा हुई है। कहिए क्या कहते हैं आप ?" अब मौलाना साहब और···मैंने कुर्आन की एक आयत पढ़ दी कि 'खुलका मिनहा जोजहा' उससे बीवी को पैदा किया। तो उन्होंने तब्दीली की और बड़ी अच्छी तब्दीली की। मैं बहुत खुश हुआ। मैंने उनकी तारीफ की। कहने लगे कि "मिनहा की जमीर इसलिए है कि उसकी जाति में से बनाई गई। मनुष्य जिस जाति का है उसी की जाति की उसकी बीवी को बनाया, उसके अन्दर से पैदा नहीं किया।" मैंने कहा, "किताबों में तो यही लिखा है।" "बेशक लिखा जरूर है। लेकिन हमारा यह खयाल है जो आपके सामने पेश कर रहे हैं।" मैंने कहा, "इन लोगों को पहले तो काफिर कहा करते थे जो ऐसा मानते थे। आप तो एक आदम और एक हौवा की पैदाइश मानते हैं न ?" "नहीं पण्डित जी, बहुत-से आदम और बहुत-सी हौवाएं पैदा हुई थीं। एक आदम और एक हौवा नहीं हुई थी। यदि आप एक मानें तो ऐतराज पैदा होता है।" मैंने कहा, "एक अब्दुल हमीद खां नाम के साहब हुए हैं पटियाले में। वे हकीम थे। इन्होने कुर्आन का तर्जुमा अंग्रेजी में किया था। उन्होंने लिखा है कि यह कानून कुदरत के बखिलाफ है कि आदमी (मर्द) के पेट से औरत पैदा हो। कुर्आन के अल्फाज हैं 'खलका मिनहा जोजहा।' इससे इसके जोड़े को पैदा किया, जोजा के माने

जोड़े के हैं। इसलिए आदमी के लिए जोजा औरत है। और औरत के लिए जोजा मर्द है। इसलिए यह जोड़े के लिए आया हुआ है कोई बात नहीं। आदम से हौवा पैदा नहीं हुई बल्कि हौवा से आदम पैदा हुआ। ठीक है, मैंने कहा कि एक बात तो आपने साफ कर दी कि आदम से हौवा पैदा नहीं हुई और वह (आदम की बेटी) नहीं हुई, लेकिन हौवा से आदम के पैदा होने पर मां-बेटे का सम्बन्ध बना रहा। यह तो आपने कर दिया है। लेकिन मेरा ऐतराज अभी एक बाकी है। आपकी तावील से ऐतराज तो कायम रहा चाहे उसकी सूरत तब्दील हो गई", तो मौलाना कहने लगे, "पण्डित जी, हम यह मानते हैं।" मैंने कहा, "जिसने पहले यह माना था उसे आप काफिर कहते थे लेकिन आज मंजूर कर रहे हैं कि आदम बहुत हुए और हौवाएं भी बहुत हुईं और इस तरह पर जो पैदा हुईं उन्हीं के नों की हुई, उन्हीं की जाति की हुईं, उन्हीं की Species की हुईं। उनसे पैदा नहींहुईं। लोग तो यह कहते चले आये हैं कि आदम की एक पसली से निकालकर हौवा तैयार की थी। अभी तक तो यही अकीदा आ रहा है। लेकिन यह तब्दीली हमारे मुआफिक है, हम इसकी तारीफ करते हैं। आप इस पर कायम रहें।" लोगों ने जहां भी यह चीज सुनी अचम्भा किया, ताज्जुब किया। मैंने कहा, "यदि कोई शक हो तो दिल्ली में मौलवी साहब से दर्याफ्त कर लीजिएगा कि उन्होंने यह जवाब दिया था कि नहीं।" ये परिवर्तन क्यों हुए ? ये इसलिए हुए कि वैदिक सिद्धान्त इतने शुद्ध, पवित्र व इतने बुद्धिपूर्वक हैं कि जरूर माननें ही पड़ते हैं इसमें कोई शक नहीं है।

हैदराबाद की बात क्या है ? मैं हैदराबाद में व्याख्यान तनासुख पर दे रहा था। किसी शख्स ने वहां Prime Minister कृष्णप्रसाद जी के पास जाकर मेरी तारीफ कर दी। जब तारीफ की कि वे तनासुख

कुर्आन से साबित करते हैं तो वे कहने लगे कि मियां कुर्आन तो मैंने पढ़ी है लेकिन हमें तो कहीं भी ऐसा मालूम नहीं दिया कि वह कौन-सा आयत है। इसलिए उन्हें जरा बुलाइये और हम से मिलाइये। वे बड़े सादा मिजाज के आदमी थे। दिन मुकर्रर हो गया। वे कार लेकर आ गए। जब वहां पहुंचे तो उनका एडीकांग खड़ा ही था। इजाजत मिलने पर हम लोग अन्दर दाखिल हुए। क्या देखा कि एक हुक्का रखा था, दूर रखा था। उसमें नै लगी हुई थी, वे हुक्का पी रहे थे। जैसे ही मैं वहां पहुंचा वे खड़े हो गए। हाथ मिलाया। कुर्सी पर बैठाया, कहा, "बैठिए।" कहने लगे कि मैंने आपकी तारीफ सुनी है। मेरे एक दोस्त मुझसे मिला करते हैं, उन्होंने मुझसे कहा था कि कल रात लेक्चर हुआ था, कुर्आन की आयतों से आपने तनासुख साबित किया था तो मैं मालूम करना चाहता हूं कि वह कौन-सी आयत है? मैंने आयत सुनानी प्रारम्भ की और उनका अर्थ करना शुरू किया। तो क्या बोलते हैं, "जजाक अल्लाह, महंबा, जजाक अल्लाह।" ऐसा कहते रहे। तारीफ करते रहे, अल्लाह आपको अच्छा फल दे इत्यादि। कहने लगे, मैंने पढ़ा जरूर लेकिन मुझे यह खयाल ही नहीं आया कि इस आयत से तनासुख साबित होता है। लेकिन जनाब के फरमाने से वह खयाल बदल गया।" मैंने कहा, "जनाब, हमें तो टोह रहती है, ढूंढ़ रहती है। इसलिए हमने इसमें से निकाल लिया। आपको इसका क्या खयाल ?" कि "हां, बेशक यही बात हो सकती है।"

आगे मैंने कहा कि "जनाब से एक बात पूछना चाहता हूं और माफी चाहता हूं", कि "नहीं-नहीं, आप खुले दिल से पूछें", (मैंने पूछा) कि "क्या कोई ऐसा जमाना भी था जब आपकी तबीयत इस्लाम की तरफ रुजू कर रही थी ?" कि "हां, लेकिन अब नहीं है।" मैंने कहा,

"क्या वजह थी जिसकी वजह से आप इस्लाम की तरफ रुजू कर रहे थे ?" कहने लगे, "मैंने देखा कि वहां हिन्दू जिनको मैं जानता हूं, जो मेरी सल्तनत में हैं सिवाय पानी, पत्थर और दरख्त के और कुछ नहीं पूजते। कोई दरख्त पूज रहा है, कोई पानी डाल रहा है। जब मैंने यह देखा कि इनका खुदा यह है तो मुझे नफरत हो गई। कुर्आन में मैंने पढ़ा है कि 'कुल्हुवल्लाहु अद् अल्लाहुद् समद्।' कह दो कि वह अल्लाह एक है, वेनियाज है। देखिए इस आयत में तो एक वाहिद् खुदा का जिक्र किया गया है कि जिस खुदा से यह दुनियां पैदा हुई है। ऐसा बयान किया गया है। कितना अच्छा बयान किया है ! आप जरा सोचिये। इन सब बातों को देखकर मेरी जरा तबीयत इस्लाम की तरफ रुजू हुई थी मगर अब बिल्कुल नहीं है।" तो मैंने कहा कि जगतप्रसाद जी इतने बड़े पण्डित हैं, आपके यहां मौजूद हैं और आपको उन्होंने नहीं समझाया ? मेरे वेद में तो इससे बहुत ऊंची चीज लिखी हुई है—इसके सुबूत में वेद का मन्त्र पेश करता हूं—

न द्वितीयो न तृतीयश्चतुर्थो नाप्युच्यते,
न पंचमो न षष्ठः सप्तमो नाप्युच्यते।
नाष्टमो न नवमो दशमो नाप्युच्यते,
तमिदं निगतं सह स एष एक एकवृदेक एव।

मैंने कहा, "न वह दो है, न तीन है, न चौथा है, न पांचवां है, न छठा है, न सातवां कहा जाता है। न आठवां है, न नवां है, न दसवां कहलाता है और सबके ऊपर गालिब है वह एक है (गिनती में), वह एक है (लासानी है), वह एक है, बसीत हैं अर्थात् एकरस है उसमें किसी गैर चीज का मेल नहीं है।" "यह वेद की बात है ?" "जी हां, यह

वेद की बात है। कुर्आन का बयान इस दर्जे का नहीं है", तो बोले, "उसमें क्या नुक्स है ? कुर्आन में उसे कैसा बयान किया ?" मैंने कहा, उसमें नुक्स, कहा है कि 'वलम्यकुल्लहू कुफुवन् अहद्' उसका सानी कोई नहीं है तो कोई उससे छोटा या बड़ा हो यह मुमकिन है कि नहीं (Logically Speaking) ? तो मुस्कराकर कहने लगे कि "हां, यह बात तो निकलती है। तो छोटा-बड़ा कौन हो सकता है ?" मैंने कहा कि छोटा तो जीवात्मा है ही। आगे की बात मुबाहिसे की है, हम कह दिया करते हैं कि खुदा से बड़ा शैतान है जो उसका कहना नहीं मानता। हमेशा उसके कहने का उल्टा करता है। लेकिन मेरे यहां है 'न तत्समश्चाभ्यधिकश्च दृश्यते' कि न कोई उसके बराबर है और न कोई उससे अधिक है। देखिये कितना मुकम्मल कलाम है ! यहां शक की जरा भी गुंजाइश नहीं है।

इस प्रकार मैंने, वेद के सच्चे व बुद्धिपूर्वक सिद्धान्तों का इस्लाम पर जो प्रभाव पड़ा है उसकी कुछ बातें आपकी सेवा में इस थोड़े से समय में अर्ज की हैं। इनको अगर आप समझ गए हैं तो समझ लीजिए कि ये सिद्धान्त सबके लिए अनुकरणीय व मानने योग्य हैं।

□